मूल्य आधारित शिक्षा

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य के वैचारिक संदर्भ में

नमूना • SAMPLE

नमूना • SAMPLE

मूल्य आधारित शिक्षा

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य के वैचारिक संदर्भ में

डॉ. सन्तोष कुमार पाण्डेय
एम.ए., एम.एड्., एम.फिल., पी–एच.डी.
असिस्टेंट प्रोफेसर – एम. एड्. विभाग
संत तुलसीदास पी.जी. कालेज, कादीपुर –सुलतानपुर (उ.प्र.)

नमूना • SAMPLE

अखण्ड पब्लिशिंग हाऊस
दिल्ली (भारत)

द्वारा प्रकाशित



अखण्ड पब्लिशिंग हाऊस

Publisher, Distributor, Exporter having an Online Bookstore

एल–9ए, प्रथम तल, गली न0 42,
सादतपुर एक्सटेंसन, दिल्ली–110094 (भारत)
Phone : 9968628081, 9555149955, 9013387535
E-mail : akhandpublishinghouse@gmail.com
akhandpublishing@yahoo.com
Website : www.akhandbooks.com

मूल्य आधारित शिक्षा
पं. श्रीराम शर्मा आचार्य के वैचारिक संदर्भ में

संस्करण : 2020
© लेखक
ISBN: 978-93-88998-33-8

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी हिस्से को प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इलेक्ट्रॉनिक या किसी अन्य माध्यम द्वारा पुनः प्राप्ति समेत किसी भी रूप में प्रतिलिपिकृत, अनुवादित, संगृहीत नहीं किया जा सकता है और न ही किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम द्वारा इसे प्रसारित किया जा सकता है।

इस पुस्तक में लेखक द्वारा व्यक्त विचार उनके व्यक्तिगत हैं जिसका प्रकाशक से कोई संबंध नहीं है।

भारत में प्रकाशित

झपसू यादव द्वारा 'अखण्ड पब्लिशिंग हाउस' के लिए प्रकाशित। वी.एम. ग्राफिक, दिल्ली द्वारा कवर डिजाइन व शब्द संयोजन तथा आरना इंटरप्राइजेज, दिल्ली से मुद्रित।

SAMPLE

विषय-सूची

	समर्पण	*vii*
	दो शब्द	*ix*
	शुभाशंसा	*xi*
	मंगल भाव	*xiii*
	पुरोवाक्	*xvii*
1.	मूल्य–शिक्षा : आशय, अवधारणा और महत्ता	1
2.	पं0 श्रीराम शर्मा आचार्य का जीवन–परिचय एवं व्यक्तित्व	21
3.	आचार्य जी का कृतित्व व प्रयोग	39
4.	आचार्य जी के शैक्षिक विचार और मूल्य–संहिता	79
5.	आचार्य जी की सांस्कृतिक विचारधारा और मूल्य–मंजूषा	126
6.	शैक्षिक–सांस्कृतिक विचारधारा की उपादेयता	208
7.	उपसंहार	239
	परिशिष्ट	252
	सन्दर्भ ग्रन्थ–सूची	268

SAMPLE

नमूना • SAMPLE

समर्पण

परमश्रद्धेय पितामह यशःशेष
पं. सभापति पाण्डेय 'वैद्य' जी के चरण कमलों
में सप्रेम–सादर समर्पित

देश–प्रेम की गंगा वक्षस्थल में बहती थी।
शिक्षा और स्वास्थ्य की चिन्ता हर क्षण मन में रहती थी।।
शिक्षक और चिकित्सक बनकर सेवा किया, प्यार बाटा है।
उतना किया दुलार हमारा जितना हमको डाटा है।।
मार्ग प्रशस्त किया हम सबका, पथ्य–अपथ्य बताया।
देकर संस्कार हम सबको, जीने की कला सिखाया।।
उनके पद–चिन्हों पर चलने का अभ्यास कर रहा हूँ।
उनको जीने और प्रमाणित करने का प्रयास कर रहा हूँ।।
जिनपर गर्व समाज कर रहा, उनका मैं वंशज हूँ।
उनकी कृपा–शुभाशीष का, अधिकारी स्वयं–सहज हूँ।।
सभापती दिलजीत लिया करते थे सबका।
मेरे पूज्य पितामह थे पर, उनपर हक था सबका।।
दया–करुणा की मूर्ति, समाज में अलबेले थे।
संघर्ष भरा परिश्रमी जीवन कितने पापड़ बेले थे।।
उनके तपः पूत जीवन का वन्दन करता हूँ।
उनके चरणों की रज माथे चन्दन करता हूँ।।
उनकी प्रेरक स्मृतियों को जीता रहता हूँ।
श्रद्धा–सुमन यह ग्रन्थ उन्हें समर्पित करता हूँ।।
❀❀❀❀❀ *शत–शत नमन्* ❀❀❀❀❀

–सन्तोष कुमार पाण्डेय

नमूना SAMPLE

नमूना • SAMPLE

दो शब्द

यह जानकर परम हर्ष हो रहा है कि शिक्षा–साहित्य के लिए समर्पित प्रियवर डॉ. सन्तोष कुमार पाण्डेय की एक पूर्ण चमत्कृत कृति 'मूल्य आधारित शिक्षा : पं. श्रीराम शर्मा आचार्य के वैचारिक सन्दर्भ में' शीघ्र ही प्रकाशित हो रही है जो मेरे शोध–प्रबन्ध निर्देशन में 'मूल्य शिक्षा के विशेष सन्दर्भ में आचार्य श्रीराम शर्मा के शैक्षिक एवं सांस्कृतिक विचारों और प्रयोगों का एक समालोचनात्मक अध्ययन' का परिमार्जित एवं संशोधित रूप हैं जो सौभाग्यवसात अब प्रकाशित हो रही है।

प्रबन्ध स्वीकृत होने के समय से ही डॉ. पाण्डेय के मनःलोक में यह भावना प्रबल थी की सन्दर्भगत शोध–प्रबन्ध यथाशीघ्र प्रकाशित हो जाय जिससे शोधकर्त्ताओं–भावकों एवं अध्येता–समाज को आचार्य रत्न पं. श्रीराम शर्मा के विचारों–प्रयोगों के इच्छुक पाठक समुदाय पं. श्रीराम शर्मा के व्यक्तित्व, विचारों और प्रयोगों से अवगत हो सके। अस्तु सन्दर्भगत शोध–प्रबन्ध पुस्तक रूप में अब प्रस्तुत हो रही है। डॉ. पाण्डेय शिक्षा और साहित्य के प्रति समर्पित शिक्षा के एक आचार्य हैं। उन्होंने घोर परिश्रम करके प्रकाश्यमान कृति को पाठकोंपयोगी एवं शोधोपयोगी बनाया है। हमें आशा ही नहीं, पूर्ण विश्वास है कि प्रकाश्यमान कृति संकल्पित लक्ष्य की भर्सक प्रतिपूर्ति करेगी।

आचार्य श्रीराम शर्मा भारतीय संस्कृति की पुरातन मान्यताओं का समादर करते हुए युगापेक्षी नवीन मूल्यों के सूत्र अपने चिन्तन–दर्शन में पिरोये हैं। उनके दर्शन में भारत और विश्वहित के लिए स्वार्थों का त्याग, नीतिसम्मत आचारों, पारस्परिक सहिष्णुता, स्वच्छता–सुचिता, परिवार–राष्ट्र के प्रति भक्ति, पर्यावरण संरक्षण के युगापेक्षी तत्त्व, जीवन के चार मुख्य पुरुषार्थ,

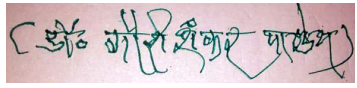
SAMPLE

आस्तिकता व कर्मफल के सिद्धान्त समावेशित किये हैं। डॉ. पाण्डेय ने परिश्रमपूर्वक आचार्य शर्मा द्वारा संस्तुत–समर्थित जीवन मूल्यों–शैक्षिक मूल्यों की संहिता को यहाँ सहज–सुबोध एवं प्रबुद्ध समाज जनोपयोगी मूल्याचार संस्तुत किये हैं जिससे उनकी गहन गवेषणा व प्रखर तत्त्वज्ञान का परिचय मिलता हैं

कृति में आचार्य शर्मा के मूल्य शिक्षा परक विचार और प्रयोग यथापेक्षित ढंग से व्याख्यायित एवं समीक्षित हैं। स्पष्टतः प्रकाशनगत कृति अपने संकल्पित निहितार्थों की प्रतिपूर्ति करती है जिसके लिए लेखक डॉ. पाण्डेय भूरिशः बधाई के पात्र हैं।

कृति सरल, सुबोध, लोकोपयोगी एवं शोधपरक है। कृति सर्वथा पाठकों एवं इच्छुक अध्येताओं के लिए परमपयोगी सिद्ध होगी, ऐसा मुझे दृढ़ विश्वास है। यह एक आधुनिक चिन्तक एवं शिक्षा–मनीषियों की श्रृंखला में महत्त्वपूर्ण सिद्ध होगी, ऐसी हमारा अभिमत है। कृति की तैयारी में आचार्य शर्मा द्वारा प्रणीत साहित्य से मुझे बड़ी सहायता मिली है जिसके लिए आचार्य शर्मा के सहयोगी साहित्य के प्रति ऋणी हूँ।

ढेर सारी मंगलकामनाओं के साथ।



दिनाँक **(डॉ. गौरीशंकर पाण्डेय)**

मार्गशीर्ष शुक्लपक्ष, प्रतिपदा
विक्रम सम्वत् 2076
तदनुसार – बुधवार 27 नवंबर 2019 (वि.)

शुभाशंसा

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य
धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्

जन–जन में विचार–क्रान्ति की ज्योति जलाकर युग–निर्माण का विगुल बजाने वाले युग–ऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य के संस्कृति–समन्वित शैक्षिक विचार निश्चित रुप से अपने पथ से भ्रष्ट उद्देश्यहीन, अजीवनोपयोगी एवं किंकर्त्तव्यविमूढ़ वर्तमान शिक्षा को नवीन दृष्टि प्रदान कर उसका काया–कल्प करने में सफल होंगे, ऐसा मेरा दृढ़ विश्वास है।

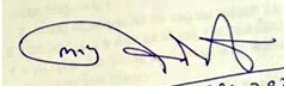
विचारकों को वर्तमान शिक्षा में कमियाँ ही कमियाँ दृष्टिगत होती हैं, जिन्हें यहाँ दोहराये जाने की आवश्यकता नहीं है। पर इन कमियों का एकमात्र मूल कारण है – भारतीय शिक्षा का अपने स्वदेशी एवं सांस्कृतिक आधार से विचलित हो जाना। उसे पुनः अपने मूल आधार पर स्थापित करना अनिवार्य है और इसके लिए आचार्य जी के विचारों को व्यवहार में लाने के सिवाय अन्य कोई भी मार्ग दिखाई नहीं देता।

वर्तमान युग मूल्यों के संकट का युग है। शिक्षा का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण कार्य व्यक्ति में अपेक्षित मूल्यों की स्थापना करना है। इस दृष्टि से पं. श्रीराम शर्मा आचार्य ने शिक्षा एवं संस्कृति सम्बन्धी गम्भीर एवं उपयोगी विचार प्रस्तुत करते हुए उन्हें सफलतापूर्वक प्रायोगिक स्तर पर भी उतारा है। डॉ. सन्तोष कुमार पाण्डेय कृत उनका समालोचनात्मक अध्ययन वर्तमान शिक्षा

FREE SAMPLE

जगत् को निश्चित रुप से एक नवीन दृष्टि प्रदान करेगा, ऐसा मेरा विश्वास है। इस कार्य के सम्पादन हेतु युवा लेखक डॉ. पाण्डेय को मैं हार्दिक बधाई देता हूँ।

सारस्वत साधना केन्द्र
भगवती–भवन
पूरेगुरुदीन शुक्ल
भटगवाँ, अमेठी (उ0प्र0)
महा शिवरात्रि व्रत,
21 फरवरी 2020, (शुक्रवार)



(डॉ. लालताप्रसाद द्विवेदी 'अगम')
निदेशक
सनातन भारतीय संस्कृति,
शिक्षा एवं साहित्य शोध संस्थान

नमूना • SAMPLE

मंगल भाव

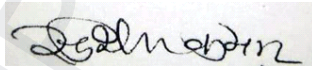
मानव मात्र के कल्याण के लिए मनसा–वाचा–कर्मणा समर्पित ऋषि परम्परा के आधुनिक संस्करण ज्ञान, विज्ञान के विविध पक्षों के पारंगत मनीषी आचार्य श्रीराम शर्मा ने नारा दिया था 'हम सुधरेंगे जग सुधरेगा' यदि गहनता से इस वाक्य की मीमांसा की जाय तो स्पष्ट होता है कि सामाजिक सुधार के पूर्व 'व्यक्ति' को सुधरना होगा। व्यक्ति से ही समाज का निर्माण होता है। आचार्य जी ने संस्कारों पर विशेष ध्यान दिया था। उन्होंने वैदिक वाङ्मय की अगाध ज्ञानराशि को नवीन परिपेक्ष्य में उपयोगी बनाकर व्यस्त/त्रस्त समाज को मानसिक शान्ति प्रदान की। यज्ञादि प्रक्रियाओं से पर्यावरण प्रदूषण निवारण के लिए किये गये उनके कालजयी योगदान को इतिहास में स्वर्णिम अक्षरों में लिखा जायेगा। प्रसन्नता की बात है कि उनके द्वारा प्रदीप्त ज्ञान–प्रदीप नित नूतन प्रभामय प्रकाश बिखेरता हुआ सक्रिय एवं ऊर्जावान है। इस ज्ञान–प्रदीप से मानवता का वर्तमान पथ तो आलोकित हो ही रहा है, भविष्य का पथ भी प्रकाशमय होगा, ऐसा दृढ़ विश्वास है।

आचार्य श्रीराम शर्मा के जीवन काल में उनका जितना साहित्य प्रकाशित था और उनके स्वर्गवास के पश्चात् उनका जितना साहित्य प्रकाशित हो रहा है (अखण्ड ज्योति आदि पत्रिकाओं के माध्यम से) उसे देखकर दाँतो तले अँगुली दबानी पड़ती है। क्या एक व्यक्ति इतना लिख सकता है? याद आते हैं महर्षि वेदव्यास जिनके बारे में कहा जाता है कि उन्होंने वेदो का विभाजन किया था, अनेक पुराणों तथा महाभारत की रचना की थी। मुझे तो कभी–कभी लगता है कि व्यास के समान/नवावतार के रुप में आचार्य श्रीराम शर्मा का धराधाम को पवित्र करने और अज्ञानान्धकार से किंकर्त्तव्यविमूढ़ मानवता का पथ–प्रशस्त करने के लिए जन्म हुआ था। देव संस्कृति विश्वविद्यालय, तथा अखण्ड ज्योति–पत्रिका सहित अनेक ग्रन्थ जिनकी गुणवत्ता की गणना

सहज नहीं है। आचार्य श्रीराम शर्मा की सारस्वत कीर्ति का उच्च स्वर में आकाश पर्यन्त गुणगान करते रहेंगे।

यदि भारत को पुनः विश्वगुरु बनना है, और स्वर्ण–पक्षी का स्थान पाना है तो उसे आचार्य श्रीराम शर्मा प्रतिपादित शिक्षा के सनातन एवं लोक कल्याणकारी मूल्यों को अपनाना ही पड़ेगा। आचार्य शर्मा के व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व के विविध पक्षों पर गुरु गम्भीर गवेषणा कार्य हो चुके हैं और हो रहे हैं और होते रहेंगे। इस कथन का मूल यह तथ्य है कि आचार्य शर्मा ने जिन शैक्षिक मूल्यों की पुनर्स्थापना की वे त्रिकाल प्रासंगिक हैं। सन्त तुलसीदास स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कादीपुर, सुलतानपुर के शिक्षा संकाय के विद्वान् प्रवक्ता डॉ. सन्तोषकुमार पाण्डेय ने वरिष्ठ शिक्षा शास्त्री ख्याति लब्ध साहित्यकार डॉ. गौरीशंकर पाण्डेय, अरविन्द; पूर्व आचार्य, शिक्षक प्रशिक्षण विभाग, का. सु. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अयोध्या के कुशल निर्देशन में ''मूल्य शिक्षा के विशेष सन्दर्भ में आचार्य श्रीराम शर्मा के शैक्षिक एवं सांस्कृतिक विचारों और प्रयोगों का एक समालोचनात्मक अध्ययन'' शीर्षक पर डॉ. राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद से शिक्षाशास्त्र विषय में पी–एच.डी. की उपाधि प्राप्त की है। यह शोध प्रबन्ध अब संशोधित ग्रंथ– ''मूल्य आधारित शिक्षा : पं. श्रीराम शर्मा आचार्य के वैचारिक सन्दर्भ में'' नाम से प्रकाशित होने जा रहा है, यह जानकर मुझे आन्तरिक प्रसन्नता हुई। इस शोध प्रबन्धात्मक ग्रन्थ की सारस्वत उपयोगिता इसी तथ्य से सुप्रमाणित है कि यह प्रबन्ध शिक्षा–मनीषी डॉ. गौरीशंकर पाण्डेय के कुशल गम्भीर एवं पारदर्शी निर्देशन में लिखा गया है और विश्वविद्यालय द्वारा नियुक्त दो सुयोग्य परीक्षकों द्वारा सुपरीक्षित है। मैंने इस शोध–प्रबन्ध का अवलोकन कर उसमें सन्निहित ''मूल्य–शिक्षा' शैक्षिक एवं सांस्कृतिक विचार और प्रयोग'' का यथामति समाकलन करने का प्रयास किया है। मुझे प्रतीत होता है कि शोध प्रबन्ध तीन शीर्षकों को एक साथ समेटे हुए है, (क) मूल्य शिक्षा, (ख) शैक्षिक प्रयोग, और (ग) सांस्कृतिक विचारों का प्रयोग। इन शीर्षकों में से किसी एक को आचार्य शर्मा के योगदान में मूल्यांकित किया जाता, तो भी प्रभूत सामग्री उपलब्ध होती। जिन लोगों ने आचार्य शर्मा के अधिकांश साहित्य को देखा–पढ़ा होगा, वे उसकी अमेयता–अगाधता से सुपरिचित होंगे। यह सन्तोष ही नहीं प्रत्युत् आहलाद का विषय है कि डॉ. सन्तोष कुमार पाण्डेय ने सुविस्तृत शोध शीर्षक को शोध–प्रबन्ध के परिमित पृष्ठों में यथा वाक्य नीरक्षीर विवेचन करने का

सफल प्रयास किया है, जिससे उनकी स्मृति, मति, प्रज्ञा की समुपस्थिति का समुचित प्रमाण मिलता है और जो आने वाले शोधार्थियों के लिए कोश शिला (मील का पत्थर) के समान है। मैं इस ग्रन्थ के सुप्रकाशन के अवसर पर ग्रन्थकार के माता–पिता को भी धन्यवाद देना चाहता हूँ जिन्होंने पुत्र को शिक्षा विषयक संस्कार प्रदान किया। शिक्षा–शास्त्र में उत्तम ग्रन्थ–रत्न देने के लिए डॉ. सन्तोष कुमार पाण्डेय को अनेकानेक शुभकामनाएँ।



दिनांक–
चैत्र शुक्ल प्रतिपदा
6 अप्रैल, 2019 शनिवार

डॉ. सुशील कुमार पाण्डेय
(साहित्येन्दु)

नमूना • SAMPLE